पितृसत्ता [Patriarchy]
पुरुष केन्द्रित समाज

डॉ इति बैनर्जी
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग
दुर्गा महाविद्यालय
रायपुर [छ.ग.]

पितृसत्तात्मक समाज

- एक सामाजिक संरचना जिसमें पुरुषों को प्रमुखता प्राप्त होती है।
- परिवार में पिता या दादाजी की सत्ता को महत्त्व मिलना।

पितृसत्तात्मक समाज की परिभाषा

ऐसा समाज जिसमें पुरुषों को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और पारिवारिक निर्णयों में प्रमुखता प्राप्त होती है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

- वैदिक काल, मध्यकाल और आधुनिक काल में पितृसत्ता की विभिन्न झलकियाँ देखने को मिलती हैं।
- पितृसत्ता का उद्भव ग्रीक शब्द “पेतरसे” बना है जो पितरिस से सम्बन्धित है और इसका मूल अर्थ है- पिता एवं आर्की अर्थात शासन।

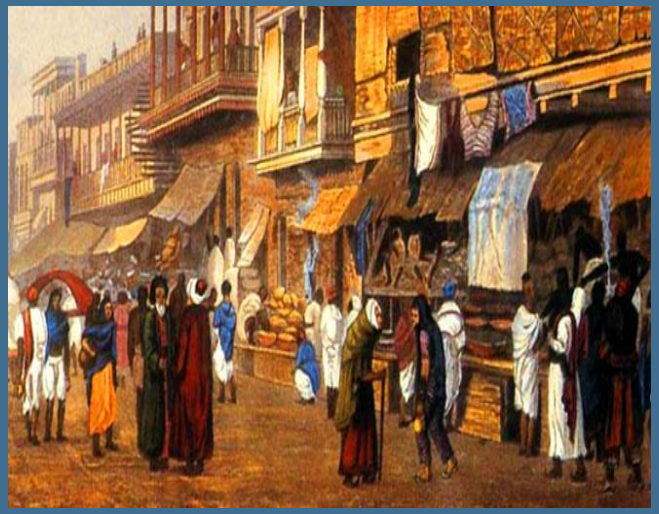

पितृसत्ता के लक्षण

- उत्तराधिकार में पुरुषों की प्राथमिकता
- पुरुषों का नेतृत्व(मुखिया का पूर्ण नियंत्रण)
- महिलाओं पर सामाजिक प्रतिबंध
- जीव वैज्ञानिक अवधारणा
- अनेक प्रकार की वर्जनाएं

पितृसत्ता के प्रभाव

- शिक्षा में असमानता
- स्वास्थ्य सुविधाओं में भेदभाव
- राजनीतिक भागीदारी में कमी
- दहेज और बाल विवाह
- वेतन में असमानता
- सामाजिक कुप्रथाएं

महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष

- महिलाओं के अधिकारों का उदय मताधिकार के मुद्दे व लोकतांत्रिक हिस्सेदारी के साथ हुआ।
- भारत में राजा राम मोहन राय, सावित्रीबाई फुले जैसे सुधारकों ने महिलाओं के अधिकारों के लिए आवाज़ उठाई।

आधुनिक समय में बदलाव

- शिक्षा व कानूनी अधिकार
- पिता की सम्पत्ति का बराबर हस्तांतरण (पुत्र एवं पुत्री दोनों के मध्य)
- महिला आरक्षण जैसे कदमों से पितृसत्ता में कमी आई है।
- इसके साथ ही महिला कार्यदल एवं जनसंचार माध्यमों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण रही।

समाधान और सुझाव

- लैंगिक समानता का प्रचार
- शिक्षा में सुधार
- नीतिगत बदलाव
- जागरूकता अभियान

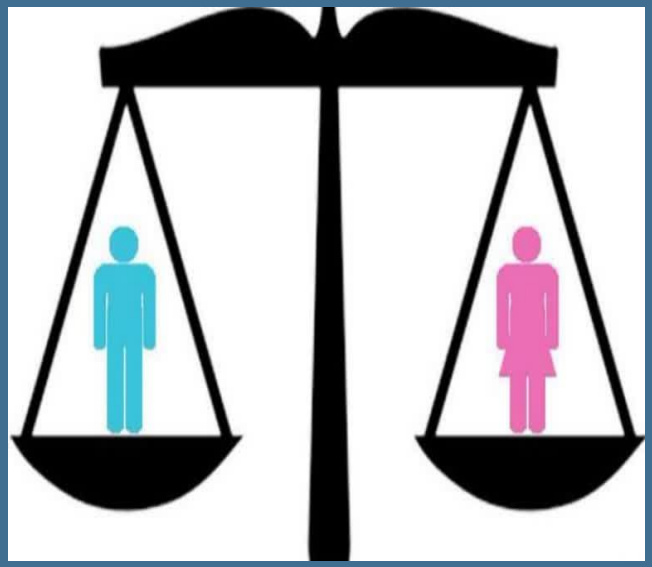

निष्कर्ष

- पितृसत्तात्मक समाज एक ऐतिहासिक संरचना है, लेकिन इसे शिक्षा, कानून और समानता से बदला जा सकता है।
- सभी लिंगों को सामान अधिकार मिलें – यही लक्ष्य होना चाहिए।
- पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष प्रधानता के कारण स्त्रियों की भूमिका और अधिकार सिमित हो जाते हैं। निष्कर्षत: समानता और न्यायपूर्ण समाज के लिए पितृसत्तात्मक व्यवस्था में परिवर्तन आवश्यक है।

धन्यवाद